डॉ. शशि भूषण
अतिथि सहायक प्राध्यापक
हिन्दी विभाग
एस. आर. ए. पी. कॉलेज
बारा-चकिया

B.A. Part-II
हिन्दी प्रतिष्ठा
Paper-III

Date:- 18-01-2022

Alanta
Page No.
Date

मुक्तिबोध की कविता : कथ्य और शिल्प

मुक्तिबोध के व्यक्तित्व में एक ओर आत्मग्रस्तता है तो दूसरी ओर मुक्ति का प्रयास तथा सर्वहारा वर्ग के पक्ष में आमूल परिवर्तन की क्रियात्मक माँग। आत्मग्रस्तता और समाज के व्यापक क्षेत्रों के छूने के प्रयास के अन्तर्द्वन्द्व में ही उनकी कविता बनती है। इन्होंने 'चाँद का मुँह टेढ़ा है' और 'भूरी-भूरी खाक धूलि' नामक काव्य संग्रहों में अपनी समकालीन चेतना को मुखरित किया है। 'चाँद का मुँह टेढ़ा है' की रचनाओं में इनके खंडित व्यक्तित्व का कशमकश सघन हो उठा है तथा सर्वहारा क्रांति की संभावनाओं में तेजी आ गई है। मुक्तिबोध जो अस्मिता की खोज करते हैं उसको लेकर उन्हें अस्तित्ववादी कहा गया है। लेकिन ये न तो अस्तित्ववादी हैं और न पूर्णतया मार्क्सवादी। एक ओर पूँजीवादी व्यवस्था, साम्राज्यवाद, ब्यूरोक्रेट, अवसरवादी बुद्धिजीवी हैं तो दूसरी ओर संकल्प धर्म की चेतना का रक्त प्लावित स्वर यानी गुरिल्ला क्रांतिकारी, संकल्पित सर्वहारा।

मुक्तिबोध स्वतः मध्यवर्ग के थे। इसीलिए वे इस वर्ग से खूब परिचित थे। इन्होंने 'भूल गलती', 'ब्रह्मराक्षस' और 'दिमागी गुहान्धकार का ओरॉंग ऊटांग' में इसी यथार्थ का चित्रण किया है। जैसे—

Scanned by CamScanner

Page No. ______
Date ______

"सामने
बेचैन घावों की अजब
तिरछी लकीरों से कटा
चेहरा
कि जिस पर काँप
दिल की भाप उठती है....
पहने हथकड़ी वह एक
ऊँचा कद
समूचे जिस्म पर लत्तर
झलकते लाल लम्बे दाग
बहते खून के।"

शोषित जन-जीवन के अन्तर्गत सर्वहारा, जिसमें गरीब किसान, श्रमिक, गरीब मजदूर, शोषित नारी, शोषित शिशु आते हैं, मुक्तिबोध ने करेहाल जनता और शोषित वर्ग को अपने काव्य का प्रमुख कथ्य बनाया है-

"भीमाकर पुलों के बहुत नीचे भयभीत
मनुष्य वस्ती के बियावान तटों पर
बहते हुए पथरीले नालों की धारा में
धराशायी चाँदनी के होंठ काले पड़ गए
हरिजन गलियों में / लटकी है पेड़ पर
कुहासे के भूतों की साँवली चूनरी
चूनरी में अटकी है कंजी आँखें गंजे सिर
टेढ़े मुँह चाँद की"

Scanned by CamScanner

Page No. ____
Date ____

मुक्तिबोध सामान्य और सामयिक समस्याओं को शोषण की मूल समस्या के साथ सन्नद्ध करने की प्रवृत्ति पर अधिकाधिक बल देते हैं। इस प्रकार कथ्य चेतना के आधार पर, मुक्तिबोध की कविताओं में सामान्य जन-जीवन के अन्तर्गत शोषित उपेक्षित निर्बल सर्वहारा वर्ग के दयनीय स्थितियोंका यथार्थ चित्रण है।

मुक्तिबोध के बिम्ब सामान्यत: भयावह होते हैं। इनमें पर्यावरण का निर्माण किया जाता है। बिम्बों को पूर्णता देने के लिए सार्थक विशेषणों का प्रयोग करते हैं। इनकी कविताएँ मुख्यत: प्रतीकात्मक हैं। ओरांग,उटांग, ब्रह्म राक्षस, चंबल की घाटी, अंधेरा प्रतीक है। कहीं-कहीं तो इन्होंने पूरी कविता प्रतीकों में ही कह दी है। सब मिलाकर इनकी भाषा में खुरदरापन है। अँग्रेजी, उर्दू के शब्दों का भी प्रयोग किया है। अँग्रेजी विशेषणों के रूप में राइफली गोली, इलेक्ट्रान रश्मियाँ, कोलतार पाथ आदि —

"मैं जिन्दा हूँ / मैं हूँ / आई एग्जिस्ट
साबित सही सलामत"